संधिग्ध काल

इस काल की अवधि 1000 ईसा पूर्व से एक ई० तक है। संगीत की दृष्टि से इसे संधिग्ध काल इसलिये कहा गया कि उस समय का कोई ग्रन्थ ऐसा नहीं है जिससे उस समय के संगीत का थोड़ा-बहुत आभास मिल सके। केवल उस काल के कुछ उपनिषद् मिलते हैं, जिनमें संगीत के विषय में थोड़ी सी सामग्री प्राप्त होती है।

छांदोग्य और वृहदारण्यक उपनिषदों में सामगायन का उल्लेख मिलता है तथा अनेक संगीत वाद्यों के नाम भी मिलते हैं। महाभारत में 'सप्त स्वरों' और 'गांधार ग्राम' का उल्लेख मिलता है। 'मृच्छकटिकम्' में सर्वप्रथम बार संगीत शास्त्र का नियमित रूप मिलता है, 6 रागों और सप्तसुरों आदि का वर्णन मिलता है। रामायण में भिन्न प्रकार के वाद्यों तथा संगीत की उपमाओं का उल्लेख मिलता है। इनसे यह सिद्ध होता है कि उस समय तक संगीत का प्रचार बराबर चलता रहा।

भरत काल

इस काल की अवधि 1 ई० से 800 ई०

Scanned with CamScanner

तक है। इस काल की विशेषता यह है कि जिस प्रकार आज कल राग-गायन प्रचलित है, उसी प्रकार उस काल में जाति-गायन प्रचलित थी।

दूसरी विशेषता यह कि सर्वप्रथम इसी काल में 3 ग्राम, 22 श्रुतियाँ, 9 स्वर (7 शुद्ध और 2 विकृत), 18 जातियाँ, २१ मूर्छनाओं आदि का वर्णन मिलता है।

Scanned with CamScanner